DEEBALI

WALL-MAGAZINE

2020-2021

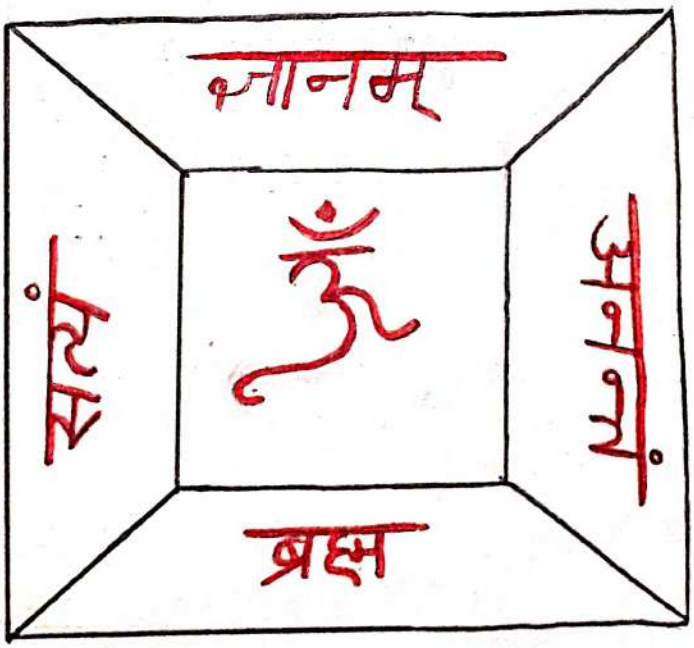

पलाश के फूल

TANU PRIYA
D.El.Ed Ist year

सम्पादकीय

"पलाश के फूल"

पलाश (पलास, ढूल, पस्सा, दाक, टेसू किंशुक, केसू) एक वृक्ष है जिसके फूल बहुत ही आकर्षक होते हैं। इसके आर्कषक फूलों के कारण इसे "जंगल की आग" भी कहा जाता है। पलाश के फूल उत्तर प्रदेश का राज्य पुष्प है। इसे "भारतीय डाकतार विभाग" द्वारा डाक टिकट पर प्रकाशित कर सम्मानित किया जा चुका है।

प्राचीन काल से ही पलाश के द्वारा होली के रंग तैयार किये जाते हैं। पलाश दो प्रकार के होते हैं, एक तो लाल पुष्पों वाला तथा दूसरा सफेद पुष्पो वाला। लाल पुष्पों वाले पलाश का वैज्ञानिक नाम "ब्युटिया मोनोस्पर्मा" है तथा सफेद पुष्पों वाले पलाश का वैज्ञानिक नाम "ब्युटिया पार्वीफ्लोरा" है, वैज्ञानिक दस्तावेजों में दोनों ही प्रकार के पलाश का वर्णन है। सफेद पुष्पों वाले पलाश वैज्ञानिक तथा औषधीय दृष्टिकोण से अधिक उपयोगी है।

"पलाश के फूल" विषय अत्यंत रोचक विषय है। इस पत्रिका के माध्यम से छात्र एवं छात्राओं को पलाश के फूल से अवगत कराना तथा पलाश के फूल के जीवन के महत्व को बताना है। जिस प्रकार पलाश का फूल पतझड़ से लड़ता है तथा अपने रंग बिखेरता है, यह बात हमें प्रेरित करती है कि कितनी भी मुश्किले आए हमें हार नहीं मानना चाहिए तथा अपने जीवन में सदैव प्रेम, स्नेह एवं खुशियों के रंग बिखेरने चाहिए।

লাল পলাশের দেশে,
ফুলে ফুটেছে পলাশ শিমুল,
ফুলে ফুলে লালে লাল,
বনেতে লেগেছে আগুন,
সাঁওতাল মেয়ে খোপায়
গুঁজে লাল পলাশ ফুল..।

Name:- Tanushree Dey
Roll no.:- 05
Session:- D.El.Ed 1st year
2020-2022

पलाश के फूल (कविता)

प्रकृति को सुन्दर सजाने,
लो आ गये, पलाश के फूल,
पतझर की सूखी शाखों में,
लग गयी चिकनी-सी पँखुड़ियाँ।

हर फुनगी लाल फूल दहके,
डूर डाल से उठी लपट,
लो डाल-डाल फूले पलाश,
यह है बसंत की आग।

दहक उठी, आग पलाश के
वन में पलाश, नग में पलाश,
भू पर पलाश, सर्वत्र पलाश,
झारखण्ड का प्रतीक पलाश।

Name Alisa Hembram
D. El. Ed 1st year
Roll No - 32
Session - 2020-2022

ये जीवन पलाश
की भाँति है.....
कठिनाईयाँ काफी सारी है,
परिश्रम करनी
ये जीवन पलाश की भाँति है
कठिनाईयाँ काफी सारी है जीवन में
परिश्रम करनी हमने ठानी है।
ये जीवन पलाश की भाँति है।।
इसलिए तो कहलाती – जंगल की आग है।
Rakhi Prasad
D.El.Ed 1st year
Roll- 47

Name :- Nishu Kumari
Roll no. :- 08
Session :- D.El.ED 1st year
2020-2020

पलाश के फूल

आज धरती लग रही है सुनहरी,
वसंत ने अपनी खुशबू है बिखेरी।
ऊस पर यह पलास के फूल,
मानो धरती दुलहन सी लग रही॥

इसे देख बचपन के दिन याद आये,
पलास के फूल से थे जो रंग बनाये।
उन रंगो से फिर होली खेलते थे,
आज सोचती हूँ, वह भी क्या दिन थे॥

पलास के फूल जब भी है आते,
अपने संग है खुशियाँ लाते।
यह हमें जीवन की एक सीख सीखाते,
पतझड़ भी इन्हें देख कैसे भाग जाते॥

जीवन में जब हो जाओ तुम हताश
कठिनाइयों को देख हो जाओ निराश
याद करना यह फूल पलास
पतझड़ से लड़कर, मुश्किलो मे डटकर
कैसे रंग बिखेरता है पलास॥

Name:- Jyoti kumari
Roll No:- 24
class:- D.El.Ed

Mamta Kumari
Roll- 65, Sec- 'A'
B.Ed 3rd Semester

पलाश का फूल

आ गया फाल्गुन का महीना,
खिलने लगे पलाश के फूल,
पेड़ो से टूट पत्ते गिर रहे,
कोलाहल पर रहे पंछी खूब।

बसंत बहार पत्ते हिलोरें लेते,
सूरज की रोशनी हुयी भरपूर।
रंग बिरंगी दुनिया मुस्कुराती,
बनकर अनजान दूरों से दूर।

भौरें मधुमक्खी करते गुँजन,
तितलियों का अब दिखे समूह।
मिल आये बच्चों की टोली,
मिलकर खेले खूब होली।

बहुत दिनों बाद दादी नानी से,
सुनते बच्चे कहानी भरपूर।
कोई चढ़ता पेड़ों पर बन बंदर,
कोई खाता आँवला आमचूर।

कुछ दिन बिताकर अपनों के संग
टेंशन को करके खत्म
आ गया फाल्गुन का महीना
खिलने लगे पलाश के फूल

पलाश के फूल

लालों का लाल, बाग में लाल फूल
कहते हैं उसे पलाश का फूल

फूलों के होते हैं कई प्रकार
उनमें से हैं एक पलाश,
बनाते हैं हमारे राज्य को
महकता हुआ स्वर्ग का संसार

बिखरते हैं छटा को प्रकृति में
कहते हैं उसे लालों के फूल
बागों के बाग में हैं राजकीय फूल
कहते हैं उसे झारखंड का राजकीय
"पलाश के फूल"

फैलाकर अपनी सुगंध
महकाता तन मन को,
या बिरंगी दुनिया से अपनी
सजाता उपवन को।

बसंत ऋतु आता है, जंगल की आग
से वातावरण सुगंधित हो जाता है
टूट जाए डाली से फिर भी
न शोक मनाता जीवन में,
बन अंगार हर्ष से वह,
नहीं डुलाता उपवन को।

Lovely gubta
D.E.L.ed Ist year
Roll.no - 38

पलाश के फूल

आया था हरे भरे वन में पतझर,
पर वह भी बीत चला।
कोंपलें लगीं, जो लगीं नित्य बढ़ने
बढ़ती ज्यों चन्द्रकला॥

चम्पई चाँदनी भी बीती, अनुराग-भरी उषा आई।
जब हरित - पीत पल्लव वन में
लौं- सी पलाश- लाली छाई॥

पतझर की सूखी शाखो में
लग गयी आग, शोले लहके।
चिनगी सी कलियाँ खिली और
हर फुनगी लाल फूल दहके॥

लग गयी आग, बन में पलाश
नभ मे पलाश, भू पर पलाश।
लो, चली फाग, हो गयी
हवा भी रंगभरी छू कर पलाश॥

Name - Payal Gupta
Class - D.EL.Ed 2nd year
Roll No - 17

पलाश के फूल

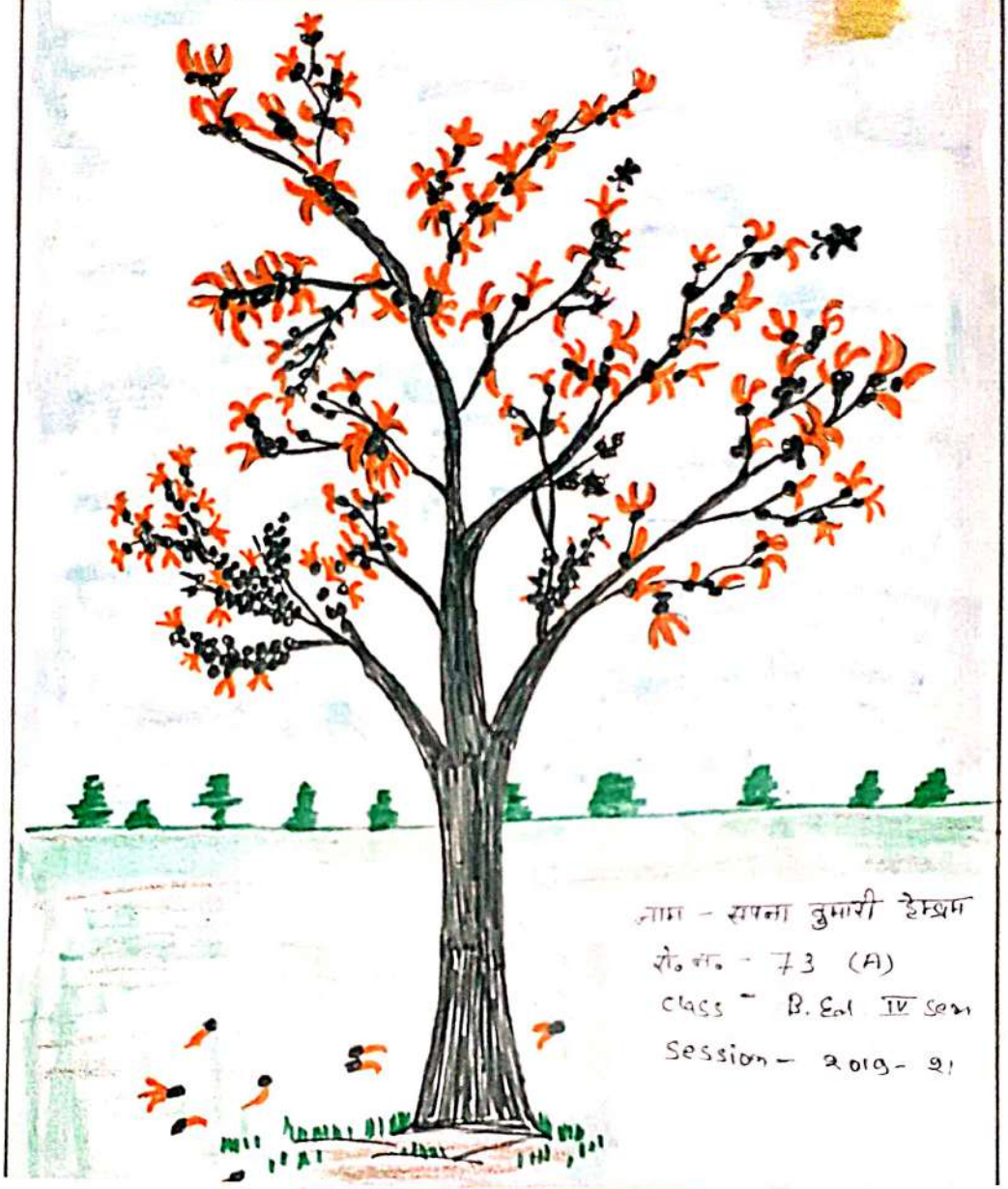

नाम - सपना कुमारी हेम्ब्रम
रो० नं० - 73 (A)
Class - B. Ed IV Sem
Session - 2019 - 21

पलाश के फूल

पलाश के फूल, सजे ना गुलदस्ते मे
खिल कर महके, सूख, गिर गये, फिर रस्ते में
जब बसंत आया, तन पर कलियां मुस्काई

खिले मखमली फूल, सुनहरी आभा छाई
भले वृक्ष की फुनगी पर थे हम इठलाये
पर हम पर ना तितली ना भँवरे मंडराये

ना गुलाब से खिले, बने शोभा उपवन की
ना माला में गुंथे, देवता के पूजन की
ना गोरी के बालों में, वेणी बन निखरे
ना ही मिलन सेज को महकाने को बिखरे

Renuka Marandi
Roll No - 119 'C'
B.Ed (SEM - IV)

मुरूत् बाहा

①

मुरूत् बाहा हों बाहायेना
सारजोम साकाम हों सागेनेना,
भुतो छेड़हायते ओनोक् आराक - आराक
सेताक् दिनं हिजुक् रेयाक् दिशा जाराक्- जाराक् ॥

दुलाड़ रेयाक् रेहेड़ मुरूत् बाहा लेका
अपनार रेहेड़ कातेज पासनाक् बाहा लेका,
सिनु रे आलेयाक् दिशा रेम हिजुक्
मोने आलेयाक् जियाबोक ॥

फागुन चान्दो रेयाक् बाहा लेका
बाहा पासनावेन तासेयाकात् लेका,
चेड़ें को हिजुक् बाहा रासा चेपेच्
उनको लेका आबो हों दुलाड़ बोन कातेज रेपेच् ॥

नाम - जुली पवरिया
रोल नं० - 01
B. El. Ed I[st] year
2020 - 2022

पलाश के फूल

आया था हरे-भरे वन में पतझड़
खिले बसंत को देखकर लौट गया
यूं खिले थे पलाश के फूल जंगल में
उसे देखकर पतझड़ सहम गया
ऐसे ही जीवन के पथ पर भी,
आते हैं कई चुनौतियों के पतझड़
तू भी इन पलाश के फूल की तरह
इन पतझड़ से न डर
ये पतझड़ तो आते रहेंगे
तेरी मुश्किलों को बढ़ाते रहेंगे
पर तू ये बात न भूल
कैसे पतझड़ से लड़कर,
निखरता है पलाश का फूल
तू भी जो मुश्किलों से लड़ेगा, तो
पलाश के फूल की तरह चमकेगा

Puja Kumari
Roll- 45 (A)
Session - 2019-21

पलाश का फूल

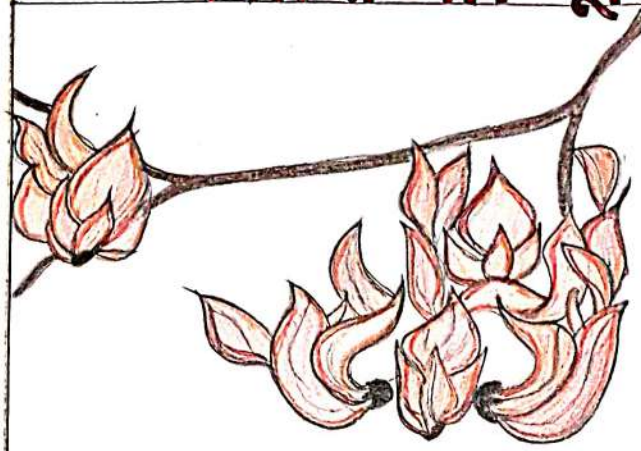

हे प्रिय
तेरी यादें तेरी बातें
मेरा शब्द पलाश,
तू ही मेरा परिचय!
आज पलाश, अब तू आ गया है,
पूर्ण होगी अब मन की आस.
ये गर्म हवाओं का मौसम उसके लिए है खास
घोल रहा है वो, इनमें अपनी मिठास
बहुत आनंदित है,
आज पलाश

Name - Bhagat Neha Gopal
DELED - Ist year
Roll no - 26

खिल आया फिर पलाश

एक माँ से बोला नन्हा सा पलाश,
कभी मत होना तुम अपने लाल के लिये उदास,
माँ का प्यार, प्रकृति की करुणा
मिलकर करते हर फूल की रचना,
खिलेंगे हर लाल के जीवन में सुरक्षित पलाश,
खिल आया फिर पलाश।
मानो लाया जीवन में नई आश।

एक सैनिक से बोला यौवन से भरा पलाश,
तुम और मैं देखें स्वप्न एक प्रकार.
उस धरती को उस अम्बर तक सजाकर
सुंदर अपार,
उस मिट्टी में मिलकर फिर खिल जाना
बन के पलाश,
खिल आया फिर पलाश।
मानो लाया जीवन में नई आशा॥

नाम ~ पुष्पा कुमारी एक्का
वर्ग ~ B.Ed
सेमेस्टर ~ III Semester
सेक्शन ~ "C" रोल नं० ~ 141
सत्र ~ 2019-2021

पलाश के फूल

उन पलाश के फूलों की याद
अभी भी ताजा है दिल में
वसंत की अगुवाई करते,
केसरिया रंग बिखेरते।
क्या धरती क्या आसमान।
तुम्हारे घर के बगीचे में तो पलाश के पेड़ो
की भरम तुम्हें याद है ?
कैसे हम पलाश के फूलों को चुन कर,
होली के रंग बनाने की असफल कोशिश
करते,
हमारे हाथ केसरिया रंग जाते।
क्या अब भी वो पलाश के पेड़ वहाँ खड़े है ?
क्या अब भी उनमें फूल उगते है ?
क्या अब भी तुम उन्हें चुनती हो ?
तीस बरस हुए हैं,
अब तो उन्हें काट गिराया होगा।

नाम - पूनम कुमारी
क्रमांक - 41
वर्ग - बी. एड. सेमेस्टर IV
सत्र - 2019-21

पलाश के फूल

अब आ गया है,
चैत का मास,
बुझ गई उसके,
मन की प्यास,
लाल चुनरी ओढ़ने की,
पूर्ण होगी आस,
रोज मना रहा है,
अब वो हर्षोल्लास,
ये गर्म हवाओं का मौसम,
उसके लिए है खास,
खोल रहा है वो,
इनमें अपनी मिठास,
बहुत आनंदित है,
आज पलाश,

Name → Ruby Kumari
Roll No → 97 (A)
Class → B.Ed

पलाश के फूल

जंगल में पलाश के पेड़ पर
फूल लग गए हैं, यह किसी को
बताना नहीं पड़ता क्योंकि
पलाश के फूल जब खिलते हैं
तो पूरे दिल औ जान से
पेड़ पर केवल फूल ही फूल
दिखते हैं, पत्ता नहीं दिखता॥

जंगल के लोग जब प्रेम करते हैं
या विद्रोह करते हैं तो
पलाश के फूल की तरह,
बालकनी के गमले में लगे
गुलाब की कली की तरह नहीं,
उनके प्रेम या विद्रोह में
किसी मिलावट की,
किसी और कसर की
गुंजाइश नहीं रहती।

पलाश के फूल को खिलते वक्त
चिंता नहीं होती कि वे शाम को
जब जमीन पर गिरेंगे
तब रास्ते पर चल रहे
मदमस्त हाथियों के पैर तले
कुचल दिए जाएंगे
उन्हें प्रेमिका के बालों में
गूंथा नहीं जाएगा...

जंगल के लोगों की
प्रेम और विद्रोह की
भी यह नियति होगी शायद
पर इस कारण पलाश के फूल
खिलना बंद नहीं करते।

Name → Priyanka Bharti
D.El.Ed 2nd year Roll no → 13

माघ महीना शुरू- होते- होते,
पलाश के फूल खिलने लगे।
माघ महीना समाप्त हुआ,
चैत महीना शुरू हुआ।
पलाश के पेड़ों ने केसरिया,
चादर ओढ़ लिया।

पूरे पलाश के डाली में,
चिनगारी सी फूल खिले।
ऐसा प्रतीत होता जैसे,
शहीदों के रक्त से रंगा डाली हो।
माघ महीना शुरू हुआ,
पलाश के फूल खिलने लगे।

हर तरफ केसरिया ही केसरिया,
हरियाली मानो खो ही गयी।
ऐसा प्रतीत होता जैसे,
युद्धों का उद्घोषणा हो।
माघ महीना शुरू हुआ,
पलाश के फूल खिलने लगे।

Surujmani murmu
Bed - IV Sem.
'103' 'C'

काश हम भी होते पलाश के फूलों से।
परेशानियों की धूप में एक-दूजे का हाथ थामे,
इकट्ठे हसीं दिखते,
हँसते-मुस्कुराते गर्म दुखों को
सुकून की ठंडक में बदलते...
और तो और, औरों को भी अपने रंग में रंगकर
त्योहारों सी खुशियां बिखेरते।

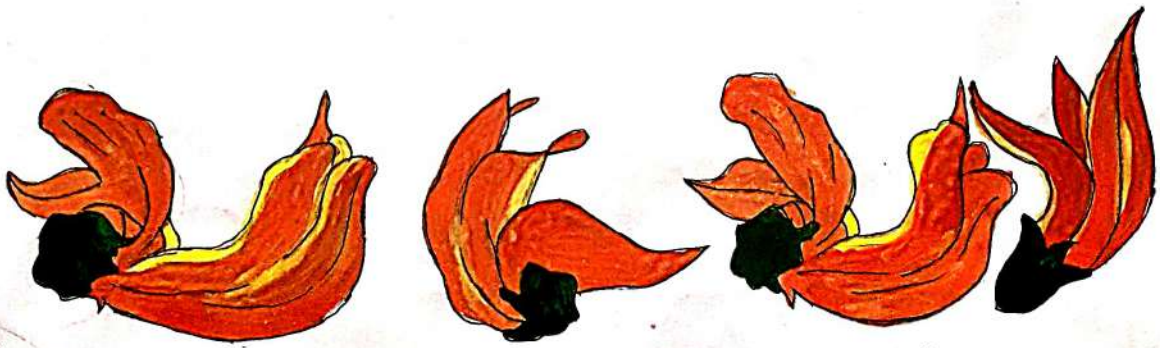

नाम – सुचित्रा सौरेन
रोल नं – 37, डी. एल. एड. प्रथम वर्ष

पलाश का फूल

देखो ये पलाश के फूल लाल-लाल,
जैसे सूरज की किरणें लाल ।
होली आई बना लो फूलों से
रंग - गुलाल
केमिकल रंगों को छोड़ अपना लो
मेक इन इंडिया का ख्याल ॥
देखो आया बसंत लाया पलाश के
फूलों की बहार ।

अब आदिवासी बहनों की जिंदगी
भी हो गई बहार ॥
इससे बढ़ गया फागुन की खूबसूरती
की बयार
चारों तरफ आ गया
पलाश के फूलों की बहार ॥
देखो ये पलाश के फूल लाल-लाल
जैसे सूरज की किरणें लाल ।

Madhu Singh
M.Ed 4th Sem
24

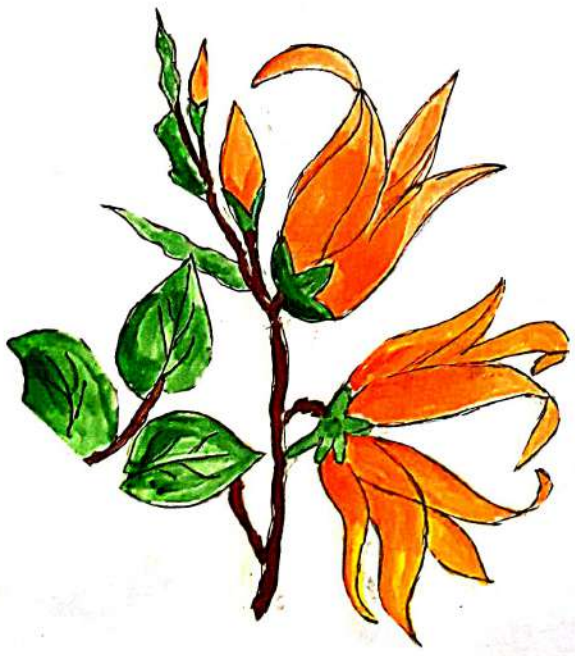

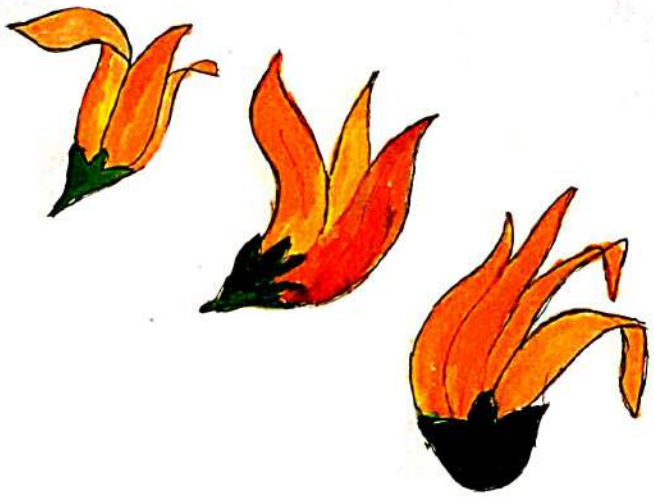

पलाश के फूल

प्यारी बसंत की प्यारी धरा पर
देखो कैसे खिल आए पलाश
पेड़ो के पत्तो ने बोला हम भी क्यूँ
रहे उदास, लाल रंग के हम भी हो
जाए क्यों अकेला रहे पलाश ।
प्यारी बसंत की प्यारी धरा पर
देखो कैसे खिल आए पलाश ।
मंद-मंद मुस्कराते जैसे धरती ओढ़े
रंग हजार, हम भी झूमे तुम भी
झूमो और झूमता रहे पलाश ।
प्यारी बसंत की प्यारी धरा पर
देखो कैसे खिल आए पलाश ।
वर्षा ऋतु से पहले बादलों में होता
हाहाकार, शांत गगन में तारो की टोली,
जैसे पलाश पर फूल हजार ।
प्यारी बसंत की प्यारी धरा पर
देखो कैसे खिल आए पलाश ।

Name - Pinki Kumari
Class - B.Ed. Roll No. 31
Session - 2019 - 2021

5